

M.A. 3RD SEMESTER

PAPER-2ND, PAPER CODE - A0809002T

TOPIC : ECONOMICS OF GROWTH

इकाई 1: आर्थिक विकास एवं संवृद्धि की मूल अवधारणाएँ (Basic Concepts of Economic Growth & Development)

प्रश्न 1: आर्थिक संवृद्धि (Economic Growth) और आर्थिक विकास (Economic Development) के बीच मूलभूत अंतर की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास अर्थशास्त्र के दो अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणात्मक स्तंभ हैं, किंतु दोनों में अंतर निहित है।

- **1. परिभाषा एवं प्रकृति:**

- **आर्थिक संवृद्धि:** यह एक परिमाणात्मक (Quantitative) एवं एक-दिशात्मक प्रक्रिया है। इसका तात्पर्य किसी देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय (Real National Income) या प्रति व्यक्ति आय (Per Capita Income) में दीर्घकाल तक होने वाली निरंतर वृद्धि से है।
- **आर्थिक विकास:** यह एक गुणात्मक (Qualitative) एवं बहु-आयामी प्रक्रिया है। इसमें आर्थिक संवृद्धि के साथ-साथ सामाजिक, संस्थागत, तकनीकी एवं संरचनात्मक परिवर्तनों को भी शामिल किया जाता है।

- **2. मापन:**

- आर्थिक संवृद्धि का मापन सकल घरेलू उत्पाद (GDP), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) एवं प्रति व्यक्ति आय के माध्यम से आसानी से किया जा सकता है।
- आर्थिक विकास का मापन केवल आय से नहीं, बल्कि मानव विकास सूचकांक (HDI), भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक (PQLI), गरीबी दर, साक्षरता दर एवं शिशु मृत्यु दर जैसे गुणात्मक सूचकों से किया जाता है।

- **3. प्रयोज्यता:**

- संवृद्धि की अवधारणा मुख्यतः विकसित देशों के लिए अधिक प्रासंगिक है, जहाँ उत्पादन के साधन एवं संरचनात्मक ढाँचा पहले से ही सुदृढ़ है।

- विकास की अवधारणा मुख्यतः विकासशील एवं अल्पविकसित देशों के लिए प्रासंगिक है, जहाँ आय वृद्धि के साथ-साथ गरीबी, भुखमरी और असमानता को दूर करना प्राथमिकता होती है।
- **निष्कर्ष:** चार्ल्स काइंडलबर्गर के शब्दों में, "आर्थिक संवृद्धि का अर्थ अधिक उत्पादन से है, जबकि आर्थिक विकास का अर्थ अधिक उत्पादन तथा उसके वितरण एवं संरचनात्मक व्यवस्था में सुधार दोनों से है।"

प्रश्न 2: मानव विकास सूचकांक (Human Development Index - HDI) की संरचना, घटकों एवं इसके महत्व का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:

मानव विकास सूचकांक (HDI) की अवधारणा वर्ष 1990 में पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब उल हक और भारतीय नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन द्वारा विकसित की गई थी। इसे संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा अपनी वार्षिक मानव विकास रिपोर्ट में जारी किया जाता है।

- **1. HDI के तीन प्रमुख आयाम एवं घटक:**

1. **दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन (Health):** इसका मापन जन्म के समय जीवन प्रत्याशा (Life Expectancy at Birth) द्वारा किया जाता है।
2. **ज्ञान एवं शिक्षा तक पहुँच (Education):** इसमें दो चर शामिल हैं:
 - वयस्क साक्षरता एवं स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष (Mean Years of Schooling)।
 - स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्ष (Expected Years of Schooling)।
3. **सभ्य जीवन स्तर (Standard of Living):** इसका मापन प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI Per Capita - PPP \$) द्वारा किया जाता है।

- **2. गणना विधि:**

प्रत्येक घटक के लिए एक सूचकांक निकाला जाता है और फिर तीनों घटकों का ज्यामितीय माध्य (Geometric Mean) निकालकर 0 से 1 के बीच मान प्राप्त किया जाता है। 1 के समीप मान उच्च मानव विकास को दर्शाता है।

- **3. महत्व एवं सीमाएँ:**

- **महत्व:** HDI केवल प्रति व्यक्ति आय के स्थान पर मानव कल्याण एवं जीवन की गुणवत्ता को विकास का असली पैमाना मानता है।
- **सीमाएँ:** यह सूचकांक आय की असमानता, पर्यावरण हास, राजनीतिक स्वतंत्रता एवं लिंग-आधारित विषमताओं को पूर्णतः समाहित नहीं करता, जिसके लिए अब 'असमानता-समायोजित HDI' (IHDI)

और 'लिंग विकास सूचकांक' (GDI) का प्रयोग किया जाने लगा है।

प्रश्न 3: सतत विकास (Sustainable Development) क्या है? सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

सतत विकास या धारणीय विकास की सबसे प्रसिद्ध परिभाषा वर्ष 1987 में ब्रंटलैंड कमीशन रिपोर्ट (*Our Common Future*) द्वारा दी गई थी: "सतत विकास वह विकास है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना पूरा करता है।"

- **1. मुख्य स्तंभ:**

सतत विकास तीन मुख्य स्तंभों पर टिका है:

- **आर्थिक स्तंभ:** सतत एवं समावेशी आर्थिक वृद्धि।
- **सामाजिक स्तंभ:** सामाजिक न्याय, समानता, स्वास्थ्य और शिक्षा।
- **पर्यावरणीय स्तंभ:** प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और जलवायु परिवर्तन पर नियंत्रण।

- **2. सतत विकास लक्ष्य (SDGs - 2015-2030):**

सितंबर 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 17 सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) और 169 उप-लक्ष्यों को अपनाया, जिन्हें 2030 तक प्राप्त करने का संकल्प लिया गया।

- **प्रमुख लक्ष्य:** गरीबी का अंत (SDG 1), शून्य भुखमरी (SDG 2), उत्तम स्वास्थ्य (SDG 3), गुणवत्तापूर्ण शिक्षा (SDG 4), लैंगिक समानता (SDG 5), स्वच्छ जल एवं स्वच्छता (SDG 6), सस्ती एवं स्वच्छ ऊर्जा (SDG 7), जलवायु कार्यवाही (SDG 13)।

- **3. प्रासंगिकता:**

सतत विकास यह सुनिश्चित करता है कि आर्थिक प्रगति पर्यावरण की बलि देकर न हासिल की जाए। यह समावेशी समृद्धि और पारिस्थितिकी संतुलन के बीच एक सामंजस्य स्थापित करता है।

प्रश्न 4: भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक (PQLI) क्या है? यह HDI से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर:

भौतिक जीवन गुणवत्ता सूचकांक (Physical Quality of Life Index - PQLI) का विकास 1970 के दशक के उत्तरार्ध में मॉरिस डी. मॉरिस (Morris D. Morris) द्वारा 'ओवरसीज डेवलपमेंट काउंसिल' के लिए किया गया था।

इसका उद्देश्य प्रति व्यक्ति आय की तुलना में जीवन की वास्तविक भौतिक स्थितियों को मापना था।

- **1. PQLI के तीन घटक:**

1. **शिशु मृत्यु दर (Infant Mortality Rate):** जीवन के प्रथम वर्ष में जीवित रहने की दर।
2. **जीवन प्रत्याशा (Life Expectancy at Age 1):** एक वर्ष की आयु पर जीवन प्रत्याशा।
3. **मौलिक साक्षरता दर (Basic Literacy Rate):** 15 वर्ष या उससे अधिक आयु के व्यक्तियों में साक्षरता।

- **2. PQLI और HDI में मुख्य अंतर:**

- **आय चर शामिल न होना:** PQLI में आय (GDP/GNI) को शामिल नहीं किया गया है, जबकि HDI में प्रति व्यक्ति GNI एक प्रमुख घटक है।
- **मापन चर:** PQLI मुख्यतः बुनियादी भौतिक स्वास्थ्य और साक्षरता पर केंद्रित है, जबकि HDI अधिक व्यापक है और इसमें स्कूली शिक्षा के वर्षों का ज्यामितीय औसत लिया जाता है।
- **गणना का तरीका:** PQLI तीनों चरों के सूचकांक का गणितीय औसत (Arithmetic Mean) लेता है, जबकि HDI ज्यामितीय माध्य (Geometric Mean) का उपयोग करता है।

प्रश्न 5: बहुआयामी गरीबी सूचकांक (Multidimensional Poverty Index - MPI) की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI) का विकास 2010 में ऑक्सफोर्ड गरीबी एवं मानव विकास पहल (OPHI) तथा संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा किया गया था। यह सूचकांक यह स्वीकार करता है कि गरीबी केवल आय की कमी नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर में वंचनाओं (Deprivations) का समूह है।

- **1. आयाम एवं संकेतक:**

MPI में 3 समान भार वाले आयाम और 10 संकेतक शामिल हैं:

1. **स्वास्थ्य (1/3 भार):** पोषण (Nutrition) और बाल मृत्यु दर (Child Mortality)।
2. **शिक्षा (1/3 भार):** स्कूली शिक्षा के वर्ष और स्कूल में उपस्थिति।
3. **जीवन स्तर (1/3 भार):** खाना पकाने का ईंधन, स्वच्छता (Sanitation), पीने का पानी, बिजली, आवास और संपत्ति (Assets)।

- **2. बहुआयामी गरीब की पहचान:**

यदि कोई व्यक्ति/परिवार कुल भारित संकेतकों के 33.3% या उससे अधिक हिस्से से वंचित है, तो उसे

‘बहुआयामी रूप से गरीब’ माना जाता है।

- **3. महत्व:**

MPI नीति निर्माताओं को यह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि लोग किन-किन क्षेत्रों में वंचित हैं, जिससे लक्षित नीतियाँ बनाना संभव हो पाता है।

प्रश्न 6: आर्थिक असमानता के मापन की गिनी गुणांक (Gini Coefficient) एवं लॉरेंज वक्र (Lorenz Curve) विधियों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

आर्थिक असमानता का तात्पर्य समाज में आय और धन के वितरण में विषमता से है। इसे मापने की सबसे लोकप्रिय विधियाँ लॉरेंज वक्र और गिनी गुणांक हैं।

- **1. लॉरेंज वक्र (Lorenz Curve):**

- इसका विकास 1905 में मैक्स ओ. लॉरेंज ने किया था।
- यह एक आरेखीय (Graphical) निरूपण है, जिसमें क्षैतिज अक्ष (X-axis) पर जनसंख्या का संचयी प्रतिशत और लंबवत अक्ष (Y-axis) पर आय का संचयी प्रतिशत दर्शाया जाता है।
- 45-डिग्री की रेखा को **पूर्ण समता रेखा (Line of Absolute Equality)** कहा जाता है। वास्तविक वितरण वक्र इस रेखा से जितना दूर झुकता है, असमानता उतनी ही अधिक होती है।

- **2. गिनी गुणांक (Gini Coefficient):**

- इसका विकास 1912 में इतालवी सांख्यिकीविद कोराडो गिनी ने किया था।
- यह लॉरेंज वक्र और पूर्ण समता रेखा के बीच के क्षेत्रफल तथा समता रेखा के नीचे के कुल क्षेत्रफल का अनुपात होता है।
- **मान:** इसका मान 0 से 1 के बीच होता है।
 - **0 (शून्य):** पूर्ण समानता (Absolute Equality)।
 - **1 (एक):** पूर्ण असमानता (Absolute Inequality - जहाँ पूरी आय केवल एक व्यक्ति के पास होती है)।

प्रश्न 7: समावेशी विकास (Inclusive Growth) की अवधारणा तथा इसके मुख्य घटकों की विवेचना कीजिए।

उत्तर:

समावेशी विकास का अर्थ एक ऐसी आर्थिक वृद्धि दर से है जो समाज के सभी वर्गों, विशेषकर निर्धन, वंचित, महिलाओं और पिछड़े वर्गों तक विकास के लाभ पहुँचाती है और सभी को विकास प्रक्रिया में भाग लेने का समान अवसर प्रदान करती है।

- **1. मुख्य घटक:**

1. **रोजगार सृजन:** केवल उत्पादन वृद्धि नहीं, बल्कि श्रम-प्रधान क्षेत्रों में उत्पादक रोजगार के अवसरों का विस्तार।
2. **गरीबी एवं असमानता में कमी:** आय की खाई को कम करना और बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति।
3. **मानव क्षमता निर्माण:** शिक्षा, कौशल विकास और स्वास्थ्य सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुँच।
4. **वित्तीय समावेशन:** बैंकिंग, ऋण और बीमा सुविधाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना।
5. **क्षेत्रीय संतुलन:** पिछड़े क्षेत्रों का तीव्र विकास।

- **2. भारत के संदर्भ में महत्व:**

भारत में पंचवर्षीय योजनाओं (विशेष रूप से 11वीं और 12वीं योजना) का मुख्य लक्ष्य "तीव्र एवं अधिक समावेशी विकास" रखा गया था। नीतियाँ जैसे - मनरेगा (MGNREGA), जन धन योजना, और आयुष्मान भारत इसी अवधारणा पर आधारित हैं।

प्रश्न 8: कुज़नेट्स वक्र (Kuznets Curve) की परिकल्पना क्या है? पर्यावरण कुज़नेट्स वक्र से इसका क्या संबंध है?

उत्तर:

साइमन कुज़नेट्स (Simon Kuznets) ने 1955 में आय असमानता और प्रति व्यक्ति आय के बीच संबंध को स्पष्ट करने के लिए कुज़नेट्स वक्र की परिकल्पना प्रस्तुत की।

- **1. आय असमानता कुज़नेट्स वक्र:**

- यह वक्र उलटे 'U' आकार (Inverted-U shape) का होता है।
- **तर्क:** आर्थिक विकास के शुरुआती चरणों में, जैसे-जैसे प्रति व्यक्ति आय बढ़ती है, आय असमानता बढ़ती है। इसका कारण ग्रामीण-शहरी प्रवास और औद्योगीकरण है।
- हालाँकि, विकास के एक निश्चित स्तर (चर्म बिंदु) पर पहुँचने के बाद, जैसे-जैसे आय और बढ़ती है, असमानता घटने लगती है।

- **2. पर्यावरण कुज़नेट्स वक्र (Environmental Kuznets Curve - EKC):**

- यह अवधारणा 1990 के दशक में विकसित हुई।

- यह दर्शाती है कि आर्थिक विकास के शुरुआती चरणों में औद्योगीकरण और संसाधन दोहन के कारण पर्यावरणीय क्षरण (Environmental Degradation) बढ़ता है।
- किंतु जब देश समृद्ध हो जाता है, तो स्वच्छ तकनीकों, पर्यावरणीय चेतना और कड़े नियमों के कारण पर्यावरण की स्थिति में सुधार होने लगता है।

प्रश्न 9: गरीबी का दुष्चक्र (Vicious Circle of Poverty) क्या है? राग्नार नर्कसे के मॉडल के आधार पर समझाएं।

उत्तर:

प्रोफेसर राग्नार नर्कसे (Ragnar Nurkse) के अनुसार, "एक देश गरीब है क्योंकि वह गरीब है" (A country is poor because it is poor) / गरीबी का दुष्चक्र उन ताकतों का एक वृत्ताकार संबंध है जो एक अल्पविकसित देश को निरंतर गरीबी की स्थिति में बनाए रखता है।

- **1. आपूर्ति पक्ष (Supply Side) का दुष्चक्र:**

कम आय $\rightarrow$ कम बचत $\rightarrow$ कम निवेश $\rightarrow$ पूँजी की कमी $\rightarrow$ कम उत्पादकता $\rightarrow$ कम आय।

- **2. मांग पक्ष (Demand Side) का दुष्चक्र:**

कम आय $\rightarrow$ क्रय शक्ति की कमी (कम मांग) $\rightarrow$ बाजार का छोटा आकार $\rightarrow$ निवेश के लिए कम प्रोत्साहन $\rightarrow$ पूँजी निर्माण में कमी $\rightarrow$ कम उत्पादकता $\rightarrow$ कम आय।

- **3. समाधान:**

नर्कसे के अनुसार, इस दुष्चक्र को तोड़ने के लिए **संतुलित विकास (Balanced Growth)** की नीति अपनानी होगी, जिसमें एक साथ कई उद्योगों में भारी पूँजी निवेश करके मांग और आपूर्ति दोनों पक्षों को गति दी जाती है।

प्रश्न 10: आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले आर्थिक एवं गैर-आर्थिक कारकों का विस्तृत विश्लेषण कीजिए।

उत्तर:

किसी भी अर्थव्यवस्था की विकास दर केवल आर्थिक संसाधनों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि सामाजिक और

संस्थागत संरचनाओं पर भी गहराई से निर्भर करती है।

- **1. आर्थिक कारक (Economic Factors):**

1. **प्राकृतिक संसाधन:** भूमि, खनिज, जल और जलवायु की उपलब्धता।
2. **पूँजी निर्माण (Capital Formation):** बचत, निवेश और भौतिक परिसंपत्तियों का निर्माण।
3. **तकनीकी प्रगति:** उत्पादन दक्षता बढ़ाने वाले नवाचार।
4. **श्रम शक्ति एवं मानव पूँजी:** कुशल, शिक्षित और स्वस्थ कार्यबल।

- **2. गैर-आर्थिक कारक (Non-Economic Factors):**

1. **सामाजिक कारक:** जाति व्यवस्था, धार्मिक दृष्टिकोण, और परिवर्तन के प्रति दृष्टिकोण (परंपरावादी बनाम आधुनिक)।
2. **राजनीतिक कारक:** राजनीतिक स्थिरता, सुशासन (Good Governance), और भ्रष्टाचार का स्तर।
3. **संस्थागत कारक:** संपत्ति के अधिकार (Property Rights), कानून का शासन, और सुदृढ़ बैंकिंग व प्रशासनिक संरचना।

इकाई 2: शास्त्रीय एवं नव-शास्त्रीय विकास सिद्धान्त (Classical & Neo-Classical Theories of Development)

प्रश्न 11: एडम स्मिथ के आर्थिक विकास के सिद्धान्त का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर:

एडम स्मिथ को अर्थशास्त्र का जनक माना जाता है। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक *The Wealth of Nations* (1776) में विकास का पहला व्यवस्थित सिद्धांत प्रस्तुत किया गया था।

- **1. मुख्य विचार एवं घटक:**

- **अहस्तक्षेप की नीति (Laissez-Faire):** बाजार की स्वतंत्र शक्तियों और 'अदृश्य हाथ' (Invisible Hand) पर बल।
- **श्रम विभाजन (Division of Labour):** उत्पादकता बढ़ाने का मूल आधार। श्रम विभाजन बाजार के विस्तार पर निर्भर करता है।
- **पूँजी संचय (Capital Accumulation):** विकास का मुख्य चालक बचत और पूँजी निवेश है।
- **कृषि एवं उद्योग की अंतःक्रिया:** विकास प्रक्रिया में कृषि को प्राथमिकता दी गई।

- **2. स्थिर अवस्था (Stationary State):**

स्मिथ के अनुसार, विकास प्रक्रिया अनंत नहीं है। पूँजीपतियों के बीच प्रतिस्पर्धा के कारण लाभ की दर गिरती है और अर्थव्यवस्था अंततः एक 'स्थिर अवस्था' में पहुँच जाती है जहाँ विकास रुक जाता है।

- **3. आलोचना:**

स्मिथ ने राज्य के हस्तक्षेप को पूरी तरह नकारा, जो मंदी एवं असमानता से निपटने में असफल रहा। उन्होंने वर्ग संघर्ष और तकनीकी परिवर्तनों की जटिलता की उपेक्षा की।

प्रश्न 12: डेविड रिकॉर्डो के आर्थिक विकास के सिद्धान्त एवं लगान के सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

डेविड रिकॉर्डो ने अपनी पुस्तक *Principles of Political Economy and Taxation* (1817) में विकास का शास्त्रीय मॉडल प्रस्तुत किया, जो कृषि क्षेत्र पर केंद्रित था।

- **1. मुख्य मान्यताएँ एवं संरचना:**

- समाज तीन वर्गों में विभाजित है: भूस्वामी (Landlords), पूँजीपति (Capitalists), और श्रमिक (Workers)।
- **लगान का सिद्धान्त:** रिकॉर्डो के अनुसार, भूमि की मौलिक एवं अविनाशी शक्तियों के प्रयोग के लिए भूस्वामी को 'लगान' (Rent) दिया जाता है। सीमांत भूमि पर लगान शून्य होता है।

- **2. विकास एवं लाभ की गिरती दर:**

जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती है, कम उपजाऊ भूमि पर खेती करनी पड़ती है। इससे खाद्यान्न की कीमतें बढ़ती हैं, जिसके कारण श्रमिकों को जीवन-निर्वाह मजदूरी देने के लिए पूँजीपति का लाभ घट जाता है। पूँजीपति का लाभ घटने से पूँजी संचय रुक जाता है और अर्थव्यवस्था स्थिर अवस्था में आ जाती है।

- **3. आलोचना:**

रिकॉर्डो ने कृषि में तकनीकी प्रगति की अवहेलना की, जो घटते प्रतिफल के नियम को रोक सकती थी।

प्रश्न 13: टी. आर. माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त और आर्थिक विकास पर इसके प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर:

थॉमस रॉबर्ट माल्थस ने 1798 में अपने *Essay on the Principle of Population* में जनसंख्या और संसाधनों के बीच असंतुलन का सिद्धान्त दिया।

- **1. मूल सिद्धान्त:**
 - **जनसंख्या वृद्धि:** जनसंख्या ज्यामितीय दर (Geometric Progression: 1, 2, 4, 8, 16...) से बढ़ती है।
 - **खाद्यान्न वृद्धि:** खाद्यान्न उत्पादन अंकगणितीय दर (Arithmetic Progression: 1, 2, 3, 4, 5...) से बढ़ता है।
 - इसके परिणामस्वरूप प्रति 25 वर्ष में जनसंख्या दोगुनी हो जाती है, जिससे भुखमरी और अकाल की स्थिति उत्पन्न होती है।
- **2. नियंत्रण उपाय:**
 - **प्राकृतिक/सकारात्मक रोक (Positive Checks):** अकाल, बीमारी, युद्ध, बाढ़।
 - **निवारक रोक (Preventive Checks):** देर से विवाह, ब्रह्मचर्य, नैतिक संयम।
- **3. प्रभावी मांग (Effective Demand) का सिद्धांत:**
माल्थस ने यह भी तर्क दिया कि अर्थव्यवस्था में 'अति-उत्पादन' (General Overproduction) और बेरोजगारी संभव है यदि प्रभावी मांग में कमी आती है।

प्रश्न 14: कार्ल मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद और पूँजीवादी विकास के सिद्धान्त की समीक्षा कीजिए।

उत्तर:

कार्ल मार्क्स ने अपनी पुस्तक *Das Kapital* में पूँजीवादी व्यवस्था के विकास, संकट और अंत का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया।

- **1. मुख्य अवधारणाएँ:**
 - **ऐतिहासिक भौतिकवाद:** समाज का विकास भौतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों (उत्पादन के साधनों) द्वारा निर्धारित होता है।
 - **अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत (Theory of Surplus Value):** वस्तु का मूल्य श्रमिक द्वारा लगाए गए श्रम से तय होता है। पूँजीपति श्रमिकों को केवल जीवन-निर्वाह मजदूरी देते हैं और शेष 'अतिरिक्त मूल्य' स्वयं हड़प लेते हैं।
 - **लाभ की दर में गिरावट की प्रवृत्ति:** पूँजीपति अधिक लाभ के लिए मशीनों (स्थिर पूँजी) पर खर्च बढ़ाते हैं, जिससे जैविक संरचना ($\$C/V\$$) बढ़ती है और लाभ की दर गिरती है।
- **2. पूँजीवाद का अंत:**
श्रमिकों का अत्यधिक शोषण (pauperization) और चेतना का विकास पूँजीवाद के खिलाफ क्रांति को जन्म देता है, जिससे समाजवाद की स्थापना होती है।

प्रश्न 15: जोसेफ शुम्पीटर के नवप्रवर्तन (Innovation) सिद्धान्त और उद्यमी की भूमिका का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर:

जोसेफ शुम्पीटर ने अपनी पुस्तक *The Theory of Economic Development* (1911) में आर्थिक विकास का एक गत्यात्मक (Dynamic) सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

- **1. विकास का चालक - नवप्रवर्तन:**

शुम्पीटर के अनुसार, विकास केवल चक्रीय प्रवाह (Circular Flow) का विस्तार नहीं है, बल्कि यह नवप्रवर्तनों के कारण होने वाला अचानक और असंतत परिवर्तन है।

- **5 प्रकार के नवप्रवर्तन:**

1. नई वस्तु का उत्पादन।
2. उत्पादन की नई विधि।
3. नया बाजार खोजना।
4. कच्चे माल का नया स्रोत।
5. उद्योग का नया संगठन (जैसे एकाधिकार बनाना)।

- **2. उद्यमी (Entrepreneur) की भूमिका:**

उद्यमी केवल प्रबंधक या पूँजीपति नहीं है; वह नवप्रवर्तक है जो बैंक साख (Bank Credit) की मदद से नए विचारों को धरातल पर उतारता है।

- **3. व्यापार चक्र (Trade Cycles):**

उद्यमी के नवप्रवर्तन से अर्थव्यवस्था में समृद्धि (Boom) आती है, लेकिन जब अन्य लोग उसका अनुकरण करते हैं, तो लाभ घटता है और मंदी (Depression) आती है।

प्रश्न 16: डब्ल्यू. डब्ल्यू. रोस्टोव के 'विकास के चरणों' (Stages of Economic Growth) का आलोचनात्मक विवरण दीजिए।

उत्तर:

डब्ल्यू. डब्ल्यू. रोस्टोव ने अपनी पुस्तक *The Stages of Economic Growth: A Non-Communist Manifesto* (1960) में विकास की प्रक्रिया को 5 ऐतिहासिक चरणों में विभाजित किया:

- 1. पाँच चरण:

1. पारंपरिक समाज (Traditional Society): सीमित तकनीक, कृषि प्रधानता, और रूढ़िवादी सामाजिक संरचना।
2. आत्म-स्फूर्ति से पूर्व की स्थितियाँ (Pre-conditions for Take-off): विज्ञान का प्रसार, बुनियादी ढाँचे (परिवहन, ऊर्जा) का विकास, और निवेश दर में वृद्धि।
3. आत्म-स्फूर्ति की अवस्था (Take-off Stage): विकास का सबसे महत्वपूर्ण चरण। इसमें शुद्ध निवेश दर राष्ट्रीय आय के 5% से बढ़कर 10% से अधिक हो जाती है, और मुख्य उद्योगों का तीव्र विकास होता है।
4. परिपक्वता की ओर कदम (Drive to Maturity): तकनीक का आधुनिक क्षेत्रों में व्यापक प्रसार (लगभग 40-60 वर्ष)।
5. अत्यधिक उपभोग की अवस्था (Age of High Mass-Consumption): टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं और समाज कल्याण पर बल (जैसे यूएसए)।

- 2. आलोचना:

चरणों की सीमाएँ स्पष्ट नहीं हैं; कई देश बिना इन चरणों से गुजरे विकसित हुए हैं।

प्रश्न 17: नव-शास्त्रीय विकास सिद्धान्त (Neo-Classical Growth Theory) की मूल मान्यताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

नव-शास्त्रीय विकास सिद्धांत 1950 के दशक में हैरोड-डोमर मॉडल की अस्थिरता (Knife-Edge Instability) के जवाब में विकसित हुआ। इसके मुख्य प्रवर्तक रॉबर्ट सोलो और ट्रेवर स्वान थे।

- 1. मूल मान्यताएँ:

- साधनों की स्थानापन्नता (Factor Substitutability): पूँजी और श्रम के बीच आसानी से प्रतिस्थापन संभव है।
- तकनीकी प्रगति: तकनीक को बहिर्जात (Exogenous) माना गया है।
- घटते प्रतिफल का नियम: पूँजी की सीमांत उत्पादकता घटती जाती है।
- पूर्ण प्रतियोगिता एवं पूर्ण रोजगार: बाजार की शक्तियाँ स्वतः संतुलन लाती हैं।

- 2. महत्व:

नव-शास्त्रीय सिद्धांत ने दिखाया कि दीर्घकाल में केवल बचत दर बढ़ाकर विकास दर को अनंत काल तक नहीं

बढ़ाया जा सकता; दीर्घकालिक संवृद्धि दर केवल तकनीकी प्रगति और जनसंख्या वृद्धि दर द्वारा निर्धारित होती है।

प्रश्न 18: शास्त्रीय (Classical) और नव-शास्त्रीय (Neo-Classical) विकास सिद्धान्तों के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

आधार	शास्त्रीय सिद्धान्त (Classical)	नव-शास्त्रीय सिद्धान्त (Neo-Classical)
मुख्य विचारक	स्मिथ, रिकॉर्डो, माल्थस	सोलो, स्वान, मीड
तकनीक एवं पूँजी-श्रम अनुपात	पूँजी-श्रम अनुपात स्थिर माना गया।	पूँजी और श्रम के बीच परिवर्तनशील अनुपात स्वीकार्य।
स्थिर अवस्था (Stationary State)	दीर्घकाल में अर्थव्यवस्था अनिवार्यतः स्थिर अवस्था में जाती है।	दीर्घकाल में अर्थव्यवस्था संतुलित वृद्धि मार्ग (Steady State) प्राप्त करती है।
तकनीकी प्रगति	सीमित ध्यान।	तकनीकी प्रगति को दीर्घकालिक संवृद्धि का मुख्य कारक माना गया।
आय वितरण	वर्ग विभाजन (भूस्वामी, पूँजीपति, श्रमिक) पर आधारित।	साधनों की सीमांत उत्पादकता (Marginal Productivity) पर आधारित।

प्रश्न 19: माल्थस के 'निम्न-स्तरीय संतुलन पाश' (Low-Level Equilibrium Trap) सिद्धान्त का

वर्णन कीजिए।

उत्तर:

माल्थस के विचारों को रिचर्ड नेल्सन (Richard Nelson) ने 'निम्न-स्तरीय संतुलन पाश' के रूप में विकसित किया।

- **1. अवधारणा:**

अल्पविकसित देश अपनी न्यूनतम प्रति व्यक्ति आय के स्तर पर फंसे रहते हैं।

- जब प्रति व्यक्ति आय जीवन-निर्वाह स्तर से ऊपर बढ़ती है, तो स्वास्थ्य में सुधार के कारण मृत्यु दर घटती है और जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती है।
- जनसंख्या वृद्धि की दर आय वृद्धि की दर से अधिक हो जाती है, जिससे प्रति व्यक्ति आय पुनः गिरकर जीवन-निर्वाह (न्यूनतम) स्तर पर आ जाती है।

- **2. पाश से बाहर निकलने का उपाय:**

नेल्सन के अनुसार, अर्थव्यवस्था को इस पाश से बाहर निकालने के लिए एक **आय-संवृद्धि का बड़ा धक्का (Big Shock)** आवश्यक है, ताकि आय वृद्धि दर जनसंख्या वृद्धि की अधिकतम संभव दर से अधिक हो जाए।

प्रश्न 20: विकास सिद्धान्तों में 'संस्थागत अर्थशास्त्र' (Institutional Economics) के योगदान की विवेचना कीजिए।

उत्तर:

पारंपरिक अर्थशास्त्र ने केवल पूँजी, श्रम और तकनीक पर ध्यान दिया, जबकि संस्थागत अर्थशास्त्रियों (जैसे डगलस नॉर्थ, गुन्नार मिर्डल) ने तर्क दिया कि 'संस्थान' (Institutions) आर्थिक विकास के वास्तविक निर्धारक हैं।

- **1. संस्थान क्या हैं?:**

संस्थान समाज के नियम, रीति-रिवाज, कानूनी संरचनाएं, और संपत्ति के अधिकार (Property Rights) हैं जो मानवीय अंतःक्रियाओं को संरचित करते हैं।

- **2. विकास में भूमिका:**

- **लेन-देन लागत (Transaction Costs) में कमी:** मजबूत कानून और कुशल न्याय प्रणाली व्यापार की लागत कम करती है।
- **निवेश को प्रोत्साहन:** यदि संपत्ति के अधिकार सुरक्षित नहीं हैं, तो उद्यमी दीर्घकालिक निवेश नहीं करेंगे।

- **गुन्नार मिर्डल की अवधारणा:** मिर्डल ने अल्पविकसित देशों को "कोमल राज्य" (Soft States) कहा, जहाँ कानूनों का पालन सही से नहीं होता, जिससे विकास बाधित होता है।

इकाई 3: विकास मॉडल (Growth Models)

प्रश्न 21: हैरोड-डोमर (Harrod-Domar) मॉडल की विस्तृत व्याख्या कीजिए। इसकी मुख्य मान्यताओं और सीमाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर:

रॉय हैरोड (1939) और एवसे डोमर (1946) ने स्वतंत्र रूप से केन्स के अल्पकालिक विश्लेषण को दीर्घकालिक विकास पर लागू करके यह मॉडल विकसित किया।

- **1. मॉडल का मूल विचार:**

निवेश की दोहरी भूमिका होती है:

1. यह आय का सृजन करता है (मांग पक्ष)।
2. यह उत्पादक क्षमता का निर्माण करता है (आपूर्ति पक्ष)।

- **2. तीन संवृद्धि दरें (हैरोड के अनुसार):**

- **वास्तविक संवृद्धि दर (\$G\$):** $G = s/v$ (जहाँ s = बचत दर, v = पूँजी-उत्पाद अनुपात)।
- **वांछित संवृद्धि दर (\$G_w\$):** वह दर जिस पर पूँजीपति अपने निवेश से पूर्णतः संतुष्ट होते हैं।
- **प्राकृतिक संवृद्धि दर (\$G_n\$):** जनसंख्या और तकनीक द्वारा निर्धारित अधिकतम संभव दर।

- **3. छुरी की धार संतुलन (Knife-Edge Equilibrium):**

पूर्ण रोजगार संतुलन के लिए $G = G_w = G_n$ होना आवश्यक है। यदि इसमें थोड़ा सा भी विचलन होता है, तो अर्थव्यवस्था या तो निरंतर मुद्रास्फीति (Inflation) या निरंतर मंदी (Depression) की ओर चली जाती है।

- **4. सीमाएँ:**

पूँजी-उत्पाद अनुपात और बचत दर को स्थिर मानना व्यावहारिक नहीं है।

प्रश्न 22: सोलो (Solow) के नव-शास्त्रीय विकास मॉडल की सचित्र व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

रॉबर्ट सोलो ने 1956 में हैरोड-डोमर मॉडल की 'छुरी की धार संतुलन' की अस्थिरता को समाप्त करने के लिए अपना मॉडल प्रस्तुत किया।

- **1. मुख्य मान्यताएँ:**

- एक ही सर्वव्यापी वस्तु का उत्पादन होता है।
- पैमाने के स्थिर प्रतिफल (Constant Returns to Scale) वाला उत्पादन फलन: $Y = F(K, L)$ ।
- पूँजी और श्रम परस्पर प्रतिस्थापनीय हैं।
- प्रति व्यक्ति उत्पादन फलन: $y = f(k)$, जहाँ $y = Y/L$ और $k = K/L$ ।

- **2. स्थिर अवस्था संतुलन (Steady State Equilibrium):**

संतुलन वहाँ होता है जहाँ प्रति व्यक्ति निवेश ($s f(k)$) पूँजी ह्रास और जनसंख्या वृद्धि ($n \cdot k$) के बराबर होता है:

$$s f(k) = (n + \delta) k$$

- यदि k इस स्तर से कम है, तो पूँजी गहनता बढ़ेगी।
- यदि k इस स्तर से अधिक है, तो पूँजी गहनता घटेगी।
- अतः अर्थव्यवस्था स्वतः ही स्थिर अवस्था (Steady State) प्राप्त कर लेती है।

- **3. निष्कर्ष:**

दीर्घकाल में प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि दर केवल तकनीकी प्रगति की दर पर निर्भर करती है, न कि बचत दर पर।

प्रश्न 23: जॉन रॉबिन्सन (Joan Robinson) के 'स्वर्ण युग' (Golden Age) मॉडल का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

श्रीमती जॉन रॉबिन्सन ने अपनी पुस्तक *The Accumulation of Capital* (1956) में पूँजी संचय का मॉडल प्रस्तुत किया।

- **1. 'स्वर्ण युग' की अवधारणा:**

रॉबिन्सन के अनुसार, "स्वर्ण युग" वह स्थिति है जहाँ पूँजी संचय की दर जनसंख्या वृद्धि दर और तकनीकी प्रगति की दर के बराबर होती है।

$$s \frac{\Delta K}{K} = \frac{\Delta L}{L}$$

इस स्थिति में:

- पूर्ण रोजगार बना रहता है।

- प्रति व्यक्ति पूँजी और प्रति व्यक्ति उत्पाद समान दर से बढ़ते हैं।
- अर्थव्यवस्था में सामंजस्यपूर्ण वृद्धि होती है।
- **2. अन्य स्थितियाँ (विचलन):**
 - **लँगड़ा स्वर्ण युग (Limping Golden Age):** तकनीकी क्षमता है लेकिन पूँजी की कमी के कारण बेरोजगारी है।
 - **सीसा युग (Lead Age):** पूँजी संचय की दर जनसंख्या वृद्धि से कम है।
 - **प्लैटिनम युग (Platinum Age):** पूँजी संचय की दर अत्यधिक तीव्र है।

प्रश्न 24: पॉल रोमर (Paul Romer) के अंतर्जात संवृद्धि मॉडल (Endogenous Growth Model) की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

पारंपरिक सोलो मॉडल में तकनीकी प्रगति को 'बहिर्जात' (बाहरी) माना गया था। पॉल रोमर (1986, 1990) ने 'अंतर्जात संवृद्धि सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया, जिसके लिए उन्हें 2018 में नोबेल पुरस्कार मिला।

- **1. मूल विचार:**
आर्थिक संवृद्धि अर्थव्यवस्था के आंतरिक निर्णयों (जैसे अनुसंधान, विकास और शिक्षा पर खर्च) का परिणाम है।
- **2. रोमर मॉडल की मुख्य विशेषताएँ:**
 - **ज्ञान एक गैर-प्रतिद्वंद्वी वस्तु (Non-rival Good) है:** एक व्यक्ति द्वारा ज्ञान/तकनीक का उपयोग करने से दूसरे के लिए उसकी उपलब्धता कम नहीं होती।
 - **ज्ञान का बाह्य प्रभाव (Knowledge Spillovers):** जब एक फर्म R&D में निवेश करती है, तो उससे प्राप्त ज्ञान का लाभ पूरी अर्थव्यवस्था को मिलता है।
 - **पैमाने के बढ़ते प्रतिफल (Increasing Returns to Scale):** पूँजी के व्यापक रूप (भौतिक पूँजी + ज्ञान पूँजी) के लिए सीमांत उत्पादकता घटती नहीं है, बल्कि स्थिर या बढ़ती रहती है।

प्रश्न 25: लुकास (Lucas) के मानव पूँजी मॉडल (Human Capital Model) का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर:

रॉबर्ट लुकास (1988) ने अंतर्जात विकास सिद्धान्त के अंतर्गत 'मानव पूँजी संचय' (Human Capital

Accumulation) को आर्थिक संवृद्धि का मुख्य इंजन माना।

- **1. मॉडल की संरचना:**

व्यक्ति अपना समय दो कार्यों में बाँटते हैं:

1. वर्तमान उत्पादन में भाग लेना।
2. शिक्षा, प्रशिक्षण और कौशल विकास (मानव पूँजी निर्माण) में समय लगाना।

- **2. आंतरिक और बाह्य प्रभाव:**

- **आंतरिक प्रभाव:** उच्च मानव पूँजी वाले श्रमिक की अपनी उत्पादकता और आय बढ़ती है।
- **बाह्य प्रभाव (Internal & External Effects):** जब किसी समाज में औसतन मानव पूँजी (शिक्षा/कौशल) का स्तर बढ़ता है, तो वह अन्य सभी श्रमिकों और भौतिक पूँजी की उत्पादकता को भी बढ़ा देता है।

- **3. नीतिगत निष्कर्ष:**

सरकार को शिक्षा, स्वास्थ्य और वोकेशनल ट्रेनिंग पर सब्सिडी और निवेश बढ़ाना चाहिए क्योंकि इसके बाह्य लाभ (Positive Externalities) पूरे समाज को मिलते हैं।

प्रश्न 26: ए.के. मॉडल (AK Model) की व्याख्या कीजिए और यह सोलो मॉडल से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर:

ए.के. मॉडल अंतर्जात संवृद्धि सिद्धांत का सबसे सरल रूप है, जिसे सेर्गियो विओबेलो और अन्य अर्थशास्त्रियों ने लोकप्रिय बनाया।

- **1. उत्पादन फलन:**

$$Y = A \cdot K^\alpha$$

जहाँ Y = कुल उत्पादन, A = स्थिर तकनीकी गुणांक, और K = व्यापक पूँजी (भौतिक + मानव पूँजी)।

- **2. सोलो मॉडल से भिन्नता:**

- **घटते प्रतिफल का अभाव:** सोलो मॉडल में पूँजी पर घटते प्रतिफल का नियम लागू होता है ($\frac{d^2Y}{dK^2} < 0$), जिससे दीर्घकालिक वृद्धि रुक जाती है। AK मॉडल में पूँजी की सीमांत उत्पादकता स्थिर रहने (A) के कारण घटते प्रतिफल लागू नहीं होते।
- **बचत दर का प्रभाव:** सोलो मॉडल में बचत दर में वृद्धि केवल अल्पकालिक प्रभाव डालती है। AK मॉडल में बचत दर (s) में वृद्धि से दीर्घकालिक संवृद्धि दर ($g = sA - \delta$) स्थायी रूप से बढ़ जाती है।

प्रश्न 27: मीड (J.E. Meade) के नव-शास्त्रीय विकास मॉडल की समीक्षा कीजिए।

उत्तर:

नोबेल पुरस्कार विजेता जे.ई. मीड (J.E. Meade) ने अपनी पुस्तक *A Neo-Classical Theory of Economic Growth* (1961) में एक ऐसा मॉडल दिया जो एक बंद अर्थव्यवस्था में पूँजी संचय और आय वृद्धि का अध्ययन करता है।

- **1. उत्पादन फलन:**

$$Y = F(K, L, N, t)$$

जहाँ K = पूँजी, L = श्रम, N = भूमि/प्राकृतिक संसाधन, t = समय (तकनीकी प्रगति)।

- **2. विकास दर का समीकरण:**

आय की वृद्धि दर ($\Delta Y/Y$) तीन घटकों का योग है:

1. पूँजी में वृद्धि का योगदान ($s \cdot \Delta K/K$)।
2. श्रम में वृद्धि का योगदान ($n \cdot \Delta L/L$)।
3. तकनीकी प्रगति की दर (r)।

- **3. महत्व:**

मीड ने दिखाया कि पूँजीपति की बचत प्रवृत्तियों और आय के वितरण का विकास दर पर क्या प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न 28: फै-राग्निस (Fei-Ranis) के श्रम अधिशेष मॉडल का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

जॉन फै और गुस्ताव राग्निस ने 1961 में अर्थर लुईस के मॉडल को अधिक परिष्कृत और गणितीय रूप में प्रस्तुत किया।

- **1. तीन चरण (Three Stages):**

- **प्रथम चरण:** कृषि क्षेत्र में श्रमिकों की सीमांत उत्पादकता शून्य होती है (छद्म बेरोजगारी)। श्रमिकों को कृषि से उद्योग में बिना कृषि उत्पादन घटाए स्थानांतरित किया जा सकता है।
- **द्वितीय चरण:** सीमांत उत्पादकता शून्य से अधिक है लेकिन जीवन-निर्वाह मजदूरी से कम है।
- **तृतीय चरण:** व्यावसायिक बिंदु (Commercialization Point) - सीमांत उत्पादकता मजदूरी दर से अधिक हो जाती है। अब कृषि क्षेत्र पूरी तरह से व्यावसायिक हो जाता है।

- 2. निष्कर्ष:

फै-राग्निस मॉडल ने कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों के बीच संतुलित विकास की आवश्यकता पर बल दिया ताकि खाद्यान्न की कमी न हो।

प्रश्न 29: हैरोड-डोमर मॉडल और सोलो मॉडल के बीच मुख्य अंतरों की तुलना कीजिए।

उत्तर:

आधार	हैरोड-डोमर मॉडल	सोलो का मॉडल
उत्पादन फलन	स्थिर गुणांक वाला (Fixed Coefficients - L-Shaped)।	परिवर्तनशील गुणांक वाला (Cobb-Douglas Type)।
साधनों में प्रतिस्थापन	श्रम और पूँजी में प्रतिस्थापन संभव नहीं।	श्रम और पूँजी में पूर्ण प्रतिस्थापन संभव।
संतुलन की प्रकृति	अस्थिर ('छुरी की धार' संतुलन)।	स्व-समायोजित एवं स्थिर (Stable Steady State)।
तकनीकी प्रगति	तटस्थ एवं अनुपस्थित/स्थिर मानी गई।	बहिर्जात (Exogenous) तकनीकी प्रगति शामिल।
बचत दर का प्रभाव	बचत दर विकास दर को स्थायी रूप से निर्धारित करती है।	बचत दर केवल आय के स्तर को बदलती है, दीर्घकालिक विकास दर को नहीं।

प्रश्न 30: अंतर्जात विकास सिद्धान्त (Endogenous Growth Theory) की नीतिगत प्रासंगिकता की विवेचना कीजिए।

उत्तर:

अंतर्जात विकास सिद्धांत ने अर्थशास्त्रियों और नीति निर्माताओं के सोचने के तरीके को बदल दिया।

- **1. प्रमुख नीतिगत सिफारिशें:**

- **R&D में सरकारी निवेश:** चूंकि निजी फर्म बाह्य लाभों (Spillovers) के कारण R&D में कम निवेश करती हैं, इसलिए सरकार को सब्सिडी, पेटेंट सुरक्षा और प्रत्यक्ष अनुसंधान संस्थान बनाने चाहिए।
- **मानव पूँजी पर बल:** प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा के साथ-साथ तकनीकी कौशल विकास पर भारी सार्वजनिक व्यय आवश्यक है।
- **बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR):** नए विचारों के नवप्रवर्तकों को सुरक्षा देना ताकि वे निवेश करने के लिए प्रोत्साहित हों।
- **खुली अर्थव्यवस्था:** अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से तकनीकों और विचारों का तेजी से प्रसार होता है।

इकाई 4: विकास की रणनीतियाँ (Strategies of Development)

प्रश्न 31: राग्नार नर्से के 'संतुलित विकास के सिद्धान्त' (Theory of Balanced Growth) की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

राग्नार नर्से ने अपनी पुस्तक *Problems of Capital Formation in Underdeveloped Countries* (1953) में संतुलित विकास की रणनीति का समर्थन किया।

- **1. मूल अवधारणा:**

अल्पविकसित देशों में बाजार का आकार छोटा होने के कारण एकल उद्योग में निवेश करना जोखिम भरा और अलाभकारी होता है।

- **समाधान:** उपभोक्ता वस्तुओं के विभिन्न उद्योगों में एक साथ (Simultaneously) भारी निवेश किया जाना चाहिए।

- **2. पूरकता का सिद्धांत (Complementarity of Demand):**

जब कई उद्योगों (जैसे जूता उद्योग, कपड़ा उद्योग, साइकिल उद्योग) में एक साथ निवेश किया जाता है, तो एक उद्योग में कार्यरत श्रमिक दूसरे उद्योगों के उत्पादों के खरीदार बन जाते हैं। इस प्रकार, उद्योग एक-दूसरे के लिए बाजार बनाते हैं और बाजार के आकार की सीमा दूर हो जाती है।

- **3. आलोचना:**

हर्षमैन और सिंगर ने तर्क दिया कि अल्पविकसित देशों में एक साथ सभी क्षेत्रों में निवेश करने के लिए पर्याप्त पूँजी, साधन और प्रशासनिक क्षमता नहीं होती।

प्रश्न 32: ए. ओ. हर्षमैन के 'असंतुलित विकास के सिद्धान्त' (Theory of Unbalanced Growth) का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर:

अल्बर्ट ओ. हर्षमैन ने अपनी पुस्तक *The Strategy of Economic Development* (1958) में नक्सों के संतुलित विकास सिद्धांत का खंडन करते हुए असंतुलित विकास का प्रस्ताव रखा।

- **1. मूल तर्क:**

अल्पविकसित देशों के पास एक साथ सभी क्षेत्रों में लगाने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं होते। इसलिए, रणनीति यह होनी चाहिए कि जानबूझकर कुछ **अग्रणी क्षेत्रों (Strategic Sectors)** में निवेश करके अर्थव्यवस्था में 'असंतुलन' पैदा किया जाए, जो अन्य क्षेत्रों को आगे बढ़ने के लिए मजबूर करे।

- **2. निवेश के रास्ते:**

- **SOC में अग्रिम निवेश (Direct Investment in Social Overhead Capital):** सड़क, बिजली, शिक्षा में पहले निवेश करना, जिससे प्रत्यक्ष उत्पादक गतिविधियों (DPA) की लागत घटे और वे प्रोत्साहित हों।
- **DPA में अग्रिम निवेश (Direct Investment in Directly Productive Activities):** सीधे कारखानों में निवेश करना, जिससे बुनियादी ढाँचे (SOC) पर दबाव पड़े और सरकार SOC बनाने के लिए बाध्य हो।

- **3. अग्रगामी एवं पश्चगामी संबंध (Forward & Backward Linkages):**

निवेश उन उद्योगों में करना चाहिए जिनके 'लिंकेज प्रभाव' उच्चतम हों (जैसे लोहा और इस्पात उद्योग)।

प्रश्न 33: पॉल एन. रोडॉन के 'प्रबल प्रयास सिद्धान्त' (Big Push Theory) का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

पॉल रोसेनस्टीन-रोडॉन ने 1943 में 'बिग पुश' सिद्धांत प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि अल्पविकसित अर्थव्यवस्था को गरीबी के गर्त से बाहर निकालने के लिए थोड़ी-थोड़ी मात्रा में निवेश काफी नहीं है; इसके लिए

न्यूनतम मात्रा में एक बड़ा निवेश का धक्का आवश्यक है।

- 1. उपमा:

जिस प्रकार एक हवाई जहाज को उड़ान भरने के लिए एक निश्चित न्यूनतम गति की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार विकास प्रक्रिया को शुरू करने के लिए पूँजी की एक न्यूनतम मात्रा अनिवार्य है।

- 2. तीन प्रकार की अविभाज्यताएँ (Indivisibilities):

1. उत्पादन फलन की अविभाज्यता (SOC): सड़क, रेल, बिजली जैसे बुनियादी ढाँचे का निर्माण टुकड़ों में नहीं किया जा सकता।
2. मांग की अविभाज्यता: बाजार का आकार बढ़ाने के लिए परस्पर पूरक उद्योगों का एक साथ समूह लगाना।
3. बचत की पूर्ति की अविभाज्यता: उच्च निवेश के लिए बचत दर में अचानक वृद्धि की आवश्यकता।

प्रश्न 34: अर्थर लुईस के 'असीमित श्रम आपूर्ति मॉडल' (Lewis Model of Unlimited Supply of Labour) की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

डब्ल्यू. अर्थर लुईस ने 1954 में अपना ऐतिहासिक मॉडल *Economic Development with Unlimited Supplies of Labour* प्रस्तुत किया, जिसके लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला।

- 1. द्वि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था (Dual Economy):

- परंपरागत कृषि क्षेत्र: इसमें 'छद्म बेरोजगारी' (Disguised Unemployment) पाई जाती है। श्रम की सीमांत उत्पादकता शून्य या नगण्य होती है।
- आधुनिक औद्योगिक क्षेत्र: यह क्षेत्र पूँजीवादी है, जहाँ उत्पादकता और लाभ उच्च हैं।

- 2. विकास की प्रक्रिया:

उद्योगपति कृषि क्षेत्र से श्रमिकों को जीवन-निर्वाह मजदूरी से थोड़ा अधिक (लगभग 30% अधिक 'पूँजीवादी मजदूरी') देकर अपने यहाँ आकर्षित करते हैं।

- चूँकि श्रम की पूर्ति असीमित है, इसलिए मजदूरी दरें नहीं बढ़तीं।
- उद्योगपतियों को अत्यधिक लाभ (Capitalist Surplus) होता है।
- इस लाभ का पुनर्निवेश (Reinvestment) किया जाता है, जिससे औद्योगिक क्षेत्र का और विस्तार होता है।

- 3. प्रक्रिया का अंत:

यह प्रक्रिया तब रुकती है जब कृषि क्षेत्र में अतिरिक्त श्रम समाप्त हो जाता है और मजदूरी दरें बढ़ने लगती हैं।

प्रश्न 35: एच. लीबेन्स्टीन के 'न्यूनतम क्रिटिकल प्रयास सिद्धान्त' (Critical Minimum Effort Thesis) की समीक्षा कीजिए।

उत्तर:

हार्ले लीबेन्स्टीन ने अपनी पुस्तक *Economic Backwardness and Economic Growth* (1957) में यह सिद्धांत दिया।

- **1. दो प्रकार के बल:**

अल्पविकसित अर्थव्यवस्था में दो विपरीत बल कार्यरत रहते हैं:

- **आय-वर्धक बल (Income-Generating Forces):** जो प्रति व्यक्ति आय बढ़ाते हैं (जैसे निवेश, नवप्रवर्तन)।
- **आय-हासक बल (Income-Depressing Forces):** जो प्रति व्यक्ति आय घटाते हैं (जैसे जनसंख्या वृद्धि, संसाधन हास)।

- **2. क्रिटिकल प्रयास की आवश्यकता:**

यदि निवेश का आकार छोटा है, तो आय-हासक बल (विशेषकर जनसंख्या वृद्धि) आय वृद्धि के प्रभाव को बेअसर कर देंगे और अर्थव्यवस्था पुनः पुरानी स्थिति में लौट आएगी।

- इसलिए, एक **न्यूनतम क्रिटिकल स्तर** से अधिक का निवेश प्रयास अनिवार्य है ताकि आय-वर्धक बल स्थायी रूप से हावी हो सकें।

प्रश्न 36: गुन्नार मिर्डल के 'संचेयी कारणता सिद्धान्त' (Theory of Cumulative Causation) और पश्चवाह प्रभाव (Backwash Effect) की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

स्वीडिश अर्थशास्त्री गुन्नार मिर्डल ने अपनी पुस्तक *Economic Theory and Underdeveloped Regions* (1957) में क्षेत्रीय असमानताओं के कारणों की व्याख्या की।

- **1. संचेयी कारणता:**

बाजार की शक्तियाँ स्वतः क्षेत्रीय समानता नहीं लातीं, बल्कि विषमता को बढ़ाती हैं। एक बार जब कोई क्षेत्र आगे निकल जाता है, तो सफलता सफलता को आकर्षित करती है और वह क्षेत्र संचेयी रूप से समृद्ध होता

जाता है।

- **2. दो मुख्य प्रभाव:**

- **पश्चवाह प्रभाव (Backwash Effects):** समृद्ध क्षेत्र पिछड़े क्षेत्रों से कुशल श्रम, पूँजी और संसाधनों को अपनी ओर खींच लेते हैं, जिससे पिछड़े क्षेत्र और अधिक निर्धन हो जाते हैं।
- **प्रसार प्रभाव (Spread Effects):** समृद्ध क्षेत्र से पिछड़े क्षेत्रों में मांग, नई तकनीक और सूचनाओं का रिसाव होना।

- **3. निष्कर्ष:**

विकासशील देशों में पश्चवाह प्रभाव प्रसार प्रभावों की तुलना में अधिक शक्तिशाली होते हैं, इसलिए राज्य का हस्तक्षेप आवश्यक है।

प्रश्न 37: अल्बर्ट हर्षमैन द्वारा प्रतिपादित 'अग्रगामी एवं पश्चगामी संबंध' (Forward and Backward Linkages) क्या हैं?

उत्तर:

हर्षमैन के असंतुलित विकास मॉडल में निवेश के प्राथमिक क्षेत्रों का चयन करने के लिए 'लिंकेज प्रभाव' सबसे महत्वपूर्ण मापदंड है।

- **1. पश्चगामी संबंध (Backward Linkages):**

इसका तात्पर्य किसी उद्योग द्वारा अपने उत्पादन के लिए कच्चे माल और निविष्टियों (Inputs) की मांग से है।

- **उदाहरण:** यदि एक स्टील कारखाना लगाया जाता है, तो वह कोयला और लौह अयस्क खनन उद्योग (पश्चगामी) को बढ़ावा देगा।

- **2. अग्रगामी संबंध (Forward Linkages):**

इसका तात्पर्य किसी उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु का उपयोग अन्य उद्योगों द्वारा कच्चे माल के रूप में किए जाने से है।

- **उदाहरण:** स्टील कारखाने का उत्पादन आगे चलकर कार निर्माण, निर्माण उद्योग और मशीनरी उद्योग (अग्रगामी) को जन्म देगा।

- **3. नीतिगत महत्व:**

सरकार को ऐसे 'मास्टर उद्योगों' (जैसे लोहा-इस्पात, पेट्रोकेमिकल्स) में निवेश करना चाहिए जिनके पश्चगामी और अग्रगामी दोनों संबंध उच्चतम हों।

प्रश्न 38: संतुलित विकास (Balanced Growth) और असंतुलित विकास (Unbalanced Growth) की रणनीतियों का तुलनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:

आधार	संतुलित विकास (नक्सै, रोडॉन)	असंतुलित विकास (हर्षमैन, सिंगर)
मूल दर्शन	सभी क्षेत्रों में एक साथ निवेश।	चुनिंदा रणनीतिक क्षेत्रों में निवेश।
संसाधनों की मांग	अत्यधिक पूँजी और प्रशासनिक क्षमता की आवश्यकता।	सीमित संसाधनों का कुशल उपयोग।
बाजार की सीमा	एक साथ निवेश से मांग की पूरकता द्वारा बाजार का निर्माण।	असंतुलन पैदा करके मांग और दबाव का निर्माण।
व्यावहारिकता	अल्पविकसित देशों के लिए व्यावहारिक रूप से कठिन।	अल्पविकसित देशों की वास्तविकताओं के अधिक अनुकूल।
मुख्य जोखिम	संसाधनों का बिखराव।	मुद्रास्फीति और रणनीतिक क्षेत्रों का गलत चयन।

प्रश्न 39: विकास रणनीति के रूप में 'कृषि बनाम उद्योग' (Agriculture vs Industry) विवाद की विवेचना कीजिए।

उत्तर:

विकास के शुरुआती दौर में यह बहस का विषय रहा कि सीमित संसाधनों को पहले कृषि में लगाया जाए या उद्योग

में।

- **1. उद्योग-प्रथम का पक्ष (Industrialization):**
 - उद्योग में उत्पादकता और तकनीकी प्रगति की दर अधिक होती है।
 - यह तीव्र आर्थिक वृद्धि और निर्यात संवर्धन का मार्ग प्रशस्त करता है।
 - महालनोबिस मॉडल (भारत) ने इसी रणनीति को अपनाया।
- **2. कृषि-प्रथम का पक्ष (Agricultural Focus):**
 - कृषि बहुसंख्यक आबादी को रोजगार और खाद्यान्न सुरक्षा प्रदान करती है।
 - कृषि विकास से ग्रामीण आय बढ़ती है, जो औद्योगिक वस्तुओं के लिए बाजार बनाती है।
 - यदि कृषि का विकास किए बिना औद्योगीकरण किया जाए, तो खाद्यान्न की कीमतें बढ़ेंगी और मुद्रास्फीति आएगी।
- **3. आधुनिक दृष्टिकोण - परस्पर पूरकता:**

आज यह माना जाता है कि कृषि और उद्योग प्रतिद्वंद्वी नहीं बल्कि पूरक हैं। कृषि उद्योगों को कच्चा माल और श्रम देती है, जबकि उद्योग कृषि को उर्वरक, ट्रैक्टर और प्रसंस्करण तकनीक प्रदान करता है।

प्रश्न 40: आयात प्रतिस्थापन (Import Substitution) बनाम निर्यात संवर्धन (Export Promotion) रणनीतियों का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:

विकासशील देशों द्वारा अपनाई जाने वाली दो प्रमुख व्यापार और विकास रणनीतियाँ हैं:

- **1. आयात प्रतिस्थापन (Inward-Looking Strategy):**
 - **अवधारणा:** विदेशी वस्तुओं के आयात को रोकने के लिए घरेलू उद्योगों का टैरिफ और कोटा द्वारा संरक्षण करना तथा उनका देश के अंदर ही उत्पादन करना।
 - **लाभ:** शुरुआती चरण में शिशु उद्योगों (Infant Industries) को सुरक्षा मिलती है और विदेशी मुद्रा की बचत होती है।
 - **हानि:** प्रतिस्पर्धा के अभाव में घरेलू उद्योग अकुशल और अक्षम हो जाते हैं (जैसे भारत में 1991 से पहले)।
- **2. निर्यात संवर्धन (Outward-Looking Strategy):**
 - **अवधारणा:** अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धी बनकर वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात बढ़ाना।
 - **लाभ:** पैमाने की बचत (Economies of Scale), नई तकनीकों का आगमन और विदेशी मुद्रा का

भारी आगमन (जैसे पूर्वी एशियाई बाघ: दक्षिण कोरिया, ताइवान)।

- **निष्कर्ष:** दीर्घकाल में निर्यात संवर्धन की रणनीति अधिक सफल सिद्ध हुई है।

इकाई 5: नियोजन एवं नीतिगत उपकरण (Planning & Analytical Tools)

प्रश्न 41: आगत-निर्गत विश्लेषण (Input-Output Analysis) की मूल संरचना और गणितीय रूप की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

आगत-निर्गत विश्लेषण का विकास नोबेल पुरस्कार विजेता वासिली लियोन्टिफ (Wassily Leontief) ने 1936 में किया था। यह अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच अंतर-निर्भरता (Interdependence) को मापने का एक प्रमुख गणितीय साधन है।

- **1. मूल अवधारणा:**

प्रत्येक उद्योग उत्पादन करने के लिए अन्य उद्योगों के उत्पादों का 'आगत' (Input) के रूप में प्रयोग करता है, और उसका अपना उत्पादन अन्य उद्योगों के लिए 'आगत' या अंतिम उपभोग के लिए 'निर्गत' (Output) बनता है।

- **2. लियोन्टिफ मैट्रिक्स:**

$$X = AX + F$$

जहाँ:

- X = कुल उत्पादन का कॉलम वेक्टर।
- A = तकनीकी आगत गुणांक मैट्रिक्स ($a_{ij} = x_{ij}/x_j$)।
- F = अंतिम मांग का वेक्टर (उपभोग, निवेश, निर्यात)।

- **3. हल (Leontief Inverse):**

$$X = (I - A)^{-1} F$$

जहाँ $(I - A)^{-1}$ को 'लियोन्टिफ व्युत्क्रम' (Leontief Inverse) कहा जाता है।

- **4. नियोजन में उपयोग:**

यदि सरकार अंतिम मांग (F) का लक्ष्य तय करती है, तो इस विश्लेषण से यह सटीक पता चल जाता है कि प्रत्येक क्षेत्र को कितना उत्पादन (X) करना होगा।

प्रश्न 42: छाया कीमतें (Shadow Prices) क्या हैं? नियोजन एवं परियोजना मूल्यांकन में इनकी

प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

छाया कीमत (या लेखांकन कीमत - Accounting Price) किसी वस्तु या साधन का वह वास्तविक सामाजिक अवसर लागत (Social Opportunity Cost) मूल्य है, जो बाजार में एकाधिकार, सब्सिडी, या सरकारी हस्तक्षेप के कारण दिखाई नहीं देता।

- **1. छाया कीमतों की आवश्यकता क्यों?:**

विकासशील देशों में बाजार कीमतें अक्सर वास्तविक दुर्लभता को नहीं दर्शाती:

- **अकुशल श्रम:** बाजार में न्यूनतम मजदूरी तय होती है, लेकिन छद्म बेरोजगारी के कारण श्रम की वास्तविक अवसर लागत (छाया कीमत) शून्य के करीब होती है।
- **विदेशी मुद्रा:** सरकार विनिमय दर को नियंत्रित रखती है, जिससे विदेशी मुद्रा का बाजार मूल्य उसकी वास्तविक दुर्लभता मूल्य से कम दिखता है।

- **2. परियोजना मूल्यांकन में उपयोग:**

सार्वजनिक परियोजनाओं (जैसे बाँध, हाईवे) का सामाजिक लाभ-लागत विश्लेषण (Social Cost-Benefit Analysis) करते समय बाजार कीमतों के स्थान पर छाया कीमतों का उपयोग किया जाता है ताकि समाज के दृष्टिकोण से सही निर्णय लिया जा सके।

प्रश्न 43: पूँजी-उत्पाद अनुपात (Capital-Output Ratio - COR) तथा वृद्धिमान पूँजी-उत्पाद अनुपात (ICOR) की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

पूँजी-उत्पाद अनुपात नियोजन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण है, जो निवेश और उत्पादन वृद्धि के संबंध को दर्शाता है।

- **1. औसत पूँजी-उत्पाद अनुपात (COR):**

यह कुल पूँजी स्टॉक (\$K\$) और कुल वार्षिक उत्पादन (\$Y\$) का अनुपात है:

$$COR = \frac{K}{Y}$$

- **2. वृद्धिमान पूँजी-उत्पाद अनुपात (ICOR):**

यह उत्पादन में एक इकाई की वृद्धि करने के लिए आवश्यक अतिरिक्त पूँजी की मात्रा को दर्शाता है:

$$ICOR = \frac{\Delta K}{\Delta Y} = \frac{1}{\frac{\Delta Y}{\Delta K}}$$

- **3. आर्थिक अर्थ:**

- कम ICOR का अर्थ है कि पूँजी की उत्पादकता उच्च है और अर्थव्यवस्था कुशल है।
- उच्च ICOR का अर्थ है कि पूँजी की उत्पादकता कम है (अकुशलता या पूँजी-गहन तकनीकों का उपयोग)।
- यदि किसी देश की बचत दर 20% है और ICOR 4 है, तो उसकी विकास दर $\$20 / 4 = 5\%$ होगी।

प्रश्न 44: तकनीक का चयन (Choice of Techniques): श्रम-प्रधान बनाम पूँजी-प्रधान तकनीकों के पक्ष और विपक्ष का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर:

विकासशील देशों के सामने नियोजन की एक मुख्य चुनौती यह तय करना होता है कि उत्पादन की कौन सी तकनीक चुनी जाए।

- **1. श्रम-प्रधान तकनीक (Labour-Intensive Technique):**

- **पक्ष:** बेरोजगारी दूर करती है; कम पूँजी की आवश्यकता; आय का समान वितरण; स्थानीय संसाधनों का उपयोग।
- **विपक्ष:** उत्पादकता कम होती है; आर्थिक आधिक्य (Economic Surplus) कम बनता है, जिससे भविष्य में पूँजी संचय की गति धीमी होती है।

- **2. पूँजी-प्रधान तकनीक (Capital-Intensive Technique):**

- **पक्ष:** उच्च उत्पादकता और गुणवत्ता; उच्च लाभ जिससे तीव्र पूँजी संचय और भविष्य में उच्च संवृद्धि होती है (सेलो-डोबरार कसौटी)।
- **विपक्ष:** वर्तमान में बेरोजगारी बढ़ा सकती है; अत्यधिक पूँजी की आवश्यकता; आय असमानता में वृद्धि।

- **3. निष्कर्ष:**

अमर्त्य सेन के अनुसार, तकनीक का चयन इस बात पर निर्भर करता है कि समाज वर्तमान उपभोग को प्राथमिकता देता है या भावी संवृद्धि को।

प्रश्न 45: लागत-लाभ विश्लेषण (Cost-Benefit Analysis - CBA) की कार्यप्रणाली एवं तकनीकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

लागत-लाभ विश्लेषण (CBA) किसी सार्वजनिक निवेश परियोजना की आर्थिक संभाव्यता और सामाजिक उपयोगिता का मूल्यांकन करने की एक व्यवस्थित विधि है।

- **1. मुख्य चरण:**

1. परियोजना की सभी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लागतों और लाभों की पहचान करना।
2. लागतों और लाभों का मौद्रिक मूल्यांकन करना (छाया कीमतों का प्रयोग करके)।
3. भविष्य के लाभों और लागतों का वर्तमान मूल्य (Present Value) निकालने के लिए बट्टा दर (Discount Rate) का चयन करना।

- **2. मूल्यांकन की प्रमुख तकनीकें:**

- **शुद्ध वर्तमान मूल्य (Net Present Value - NPV):**
$$NPV = \sum \frac{B_t - C_t}{(1 + r)^t}$$

यदि $NPV > 0$, तो परियोजना स्वीकार्य है।
- **लाभ-लागत अनुपात (Benefit-Cost Ratio - BCR):** यदि $BCR > 1$, तो परियोजना लाभदायक है।
- **आंतरिक प्रतिफल दर (Internal Rate of Return - IRR):** वह बट्टा दर जिस पर $NPV = 0$ हो जाता है।

प्रश्न 46: सामाजिक लाभ-लागत विश्लेषण (Social Cost-Benefit Analysis - SCBA) की UNIDO एवं OECD पद्धतियों की तुलना कीजिए।

उत्तर:

सार्वजनिक परियोजनाओं के मूल्यांकन के लिए दो प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय पद्धतियाँ विकसित की गईं:

- **1. UNIDO पद्धति (Dasgupta, Marglin and Sen):**

- **मापक (Numeraire):** यह उपभोग को मापक मानती है (डोमेस्टिक उपभोग मूल्य)।
- यह परियोजना के आय-वितरण प्रभाव (गरीबों पर प्रभाव) को स्पष्ट भाग प्रदान करती है।
- इसमें छाया कीमतों का निर्धारण राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के आधार पर किया जाता है।

- **2. OECD/लिटल-मिरलीस (Little-Mirrlees) पद्धति:**

- **मापक (Numeraire):** यह मुक्त विदेशी मुद्रा (Convertible Foreign Exchange) में बिना प्रतिबद्ध सार्वजनिक आय को मापक मानती है।
- यह विश्व बाजार कीमतों (Border Prices) को छाया कीमतों के रूप में उपयोग करने पर अत्यधिक

बल देती है।

प्रश्न 47: आर्थिक नियोजन के प्रकार: निर्देशात्मक (Indicative) बनाम आदेशात्मक (Imperative) नियोजन का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- **1. आदेशात्मक/केन्द्रीकृत नियोजन (Imperative/Command Planning):**
 - **विशेषता:** उत्पादन, संसाधनों के आवंटन और कीमतों का संपूर्ण नियंत्रण केंद्रीय नियोजन प्राधिकरण (राज्य) के पास होता है। निजी क्षेत्र अनुपस्थित या नगण्य होता है।
 - **उदाहरण:** पूर्व सोवियत संघ (USSR) का नियोजन।
 - **गुण/दोष:** संसाधनों का त्वरित जुटाव संभव, लेकिन अकुशलता और उपभोक्ता की संप्रभुता का अंत।
- **2. निर्देशात्मक नियोजन (Indicative Planning):**
 - **विशेषता:** यह मिश्रित एवं बाजार अर्थव्यवस्थाओं में अपनाया जाता है। सरकार लक्ष्यों और प्राथमिकताओं को तय करती है और निजी क्षेत्र को वित्तीय व कर प्रोत्साहनों के माध्यम से मार्गदर्शन देती है।
 - **उदाहरण:** फ्रांस का नियोजन, भारत में 1991 के बाद का नियोजन।
 - **गुण/दोष:** बाजार की लचीलापन और निजी पहल बनी रहती है।

प्रश्न 48: नियोजन में 'दीर्घकालिक दृष्टिकोण' (Perspective Planning) एवं 'रोलिंग प्लान' (Rolling Plan) की अवधारणा क्या है?

उत्तर:

- **1. दीर्घकालिक दृष्टिकोण नियोजन (Perspective Planning):**
 - यह 15 से 20 या 25 वर्षों की लंबी अवधि के लिए तैयार किया गया एक व्यापक खाका होता है।
 - **उद्देश्य:** बुनियादी ढाँचे का निर्माण, गरीबी उन्मूलन, और जनसंख्या नियंत्रण जैसे दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करना जिन्हें 5 साल की छोटी अवधि में पूरा नहीं किया जा सकता। मध्यम अवधि (5-वर्षीय) योजनाएं इसी का हिस्सा होती हैं।
- **2. रोलिंग प्लान (Rolling Plan):**
 - इसकी अवधारणा गुन्नार मिर्डल ने दी थी।
 - इसमें हर साल तीन योजनाएं साथ चलती हैं: (i) चालू वर्ष का बजट, (ii) 3-5 वर्षों की योजना जिसे

प्रतिवर्ष संशोधित किया जाता है, और (iii) 10-20 वर्षों का दीर्घकालिक खाका।

- **भारत में प्रयोग:** जनता पार्टी सरकार द्वारा 1978-80 में लागू किया गया था।

प्रश्न 49: विकेंद्रीकृत नियोजन (Decentralized Planning) क्या है? इसके लाभों की विवेचना कीजिए।

उत्तर:

विकेंद्रीकृत नियोजन (Bottom-Up Planning) का तात्पर्य नियोजन की प्रक्रिया को केंद्रीय स्तर से हटाकर स्थानीय, क्षेत्रीय और ग्रामीण स्तर पर ले जाने से है।

- **1. मुख्य विशेषताएँ:**
योजनाएं दिल्ली या राज्य की राजधानी में बैठने वाले नौकरशाहों द्वारा नहीं, बल्कि स्थानीय निकायों (जैसे पंचायतों और नगरपालिकाओं) द्वारा स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर बनाई जाती हैं।
- **2. प्रमुख लाभ:**
 - **स्थानीय जरूरतों की पहचान:** स्थानीय लोग अपनी समस्याओं (जल, प्राथमिक स्कूल, सड़क) को बेहतर समझते हैं।
 - **जन भागीदारी:** योजनाओं के क्रियान्वयन और निगरानी में आम जनता की सहभागिता बढ़ती है।
 - **जवाबदेही एवं पारदर्शिता:** भ्रष्टाचार पर रोक लगती है।
 - **भारत में संवैधानिक स्थिति:** 73वें और 74वें संविधान संशोधन (1992) द्वारा जिला योजना समितियों (DPC) का गठन करके इसे कानूनी ढाँचा प्रदान किया गया।

प्रश्न 50: आगत-निर्गत मॉडल में 'हॉकिन्स-साइमन शर्तों' (Hawkins-Simon Conditions) का क्या महत्व है?

उत्तर:

आगत-निर्गत विश्लेषण में यह जांचना आवश्यक होता है कि क्या प्रस्तावित उत्पादन प्रणाली व्यावहारिक रूप से संभव और अर्थपूर्ण है या नहीं। इसके लिए हॉकिन्स-साइमन शर्तें लागू की जाती हैं।

- **1. दो मुख्य शर्तें:**
लियोन्टिफ आगत गुणांक मैट्रिक्स A और तकनीकी मैट्रिक्स $(I - A)$ के लिए:
 1. **मुख्य विकर्ण के तत्व धनात्मक होने चाहिए:** $\|I - A\|$ के विकर्ण तत्व $(1 - a_{ii}) > 0$ होने चाहिए, अर्थात् $a_{ii} < 1$ । इसका अर्थ है कि 1 इकाई वस्तु उत्पादित करने के लिए उसी वस्तु की 1 से कम

इकाई आगत के रूप में लगनी चाहिए।

2. **डिटर्मिनेंट धनात्मक होना चाहिए:** $|I - A|$ मैट्रिक्स का सारणिक (Determinant) हमेशा धनात्मक होना चाहिए ($|I - A| > 0$)।

- **2. महत्व:**

यदि ये शर्तें पूरी नहीं होती हैं, तो इसका अर्थ है कि प्रणाली इतनी अकुशल है कि वह उत्पादन करने में उससे अधिक संसाधनों की खपत कर देती है जितना वह बनाती है।

इकाई 6: भारतीय नियोजन एवं समकालीन नीतियाँ (Indian Planning & Contemporary Policies)

प्रश्न 51: भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के इतिहास, सफलता और असफलताओं का एक समग्र मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:

भारत ने स्वतंत्रता के बाद 1951 में सोवियत संघ के मॉडल से प्रेरित होकर पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से विकास का रास्ता चुना। 1951 से 2017 के बीच कुल 12 पंचवर्षीय योजनाएं लागू की गईं।

- **1. प्रमुख सफलताएँ:**

- **खाद्यान्न आत्मनिर्भरता:** हरित क्रांति (3री और वार्षिक योजनाओं) के माध्यम से देश खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बना।
- **बुनियादी औद्योगिक ढाँचा:** द्वितीय योजना (महालनोबिस मॉडल) में भारी उद्योगों (भिलाई, रूरकेला, दुर्गापुर स्टील प्लांट) की स्थापना हुई।
- **सेवा क्षेत्र और जीडीपी वृद्धि:** 10वीं और 11वीं योजना में विकास दर 8% से अधिक रही।

- **2. प्रमुख असफलताएँ:**

- **गरीबी और बेरोजगारी:** वृद्धि के बावजूद बड़े पैमाने पर गरीबी और बेरोजगारी बनी रही।
- **कृषि संकट:** औद्योगिक विकास पर अत्यधिक बल देने से कृषि क्षेत्र पिछड़ गया।
- **आय विषमता:** समृद्धि का लाभ समाज के निचले तबके तक समान रूप से नहीं पहुँचा।

प्रश्न 52: नीत आयोग (NITI Aayog) के गठन, संरचना और योजना आयोग से इसके मुख्य अंतरों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

1 जनवरी 2015 को भारत सरकार ने योजना आयोग के स्थान पर 'राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान' (NITI Aayog) का गठन किया।

- **1. संरचना:**

- **अध्यक्ष:** भारत के प्रधानमंत्री।
- **गवर्निंग काउंसिल:** सभी राज्यों के मुख्यमंत्री और केंद्र शासित प्रदेशों के उपराज्यपाल।
- **उपाध्यक्ष एवं सीईओ:** प्रधानमंत्री द्वारा नियुक्त।

- **2. नीति आयोग और योजना आयोग में अंतर:**

आधार	योजना आयोग	नीति आयोग
दृष्टिकोण	शीर्ष से नीचे (Top-Down)।	नीचे से शीर्ष (Bottom-Up)।
राज्यों की भूमिका	सीमित (केवल राष्ट्रीय विकास परिषद में)।	गवर्निंग काउंसिल के माध्यम से पूर्ण सहभागिता (सहकारी संघवाद)।
वित्तीय आवंटन	मंत्रालयों और राज्यों को निधि आवंटित करने का अधिकार था।	केवल 'थिंक टैंक' है; निधि आवंटन का अधिकार वित्त मंत्रालय के पास है।

प्रश्न 53: भारत में 1991 के आर्थिक सुधारों (LPG नीति - उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण) के कारणों और प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर:

वर्ष 1991 में भारत को गंभीर भुगतान संतुलन संकट (BoP Crisis) और विदेशी मुद्रा भंडार में भारी गिरावट का सामना करना पड़ा, जिसके कारण सरकार को नई आर्थिक नीति (NEP) अपनानी पड़ी।

- **1. तीन स्तंभ:**

- **उदारीकरण (Liberalization):** औद्योगिक लाइसेंसिंग व्यवस्था (परमिट राज) का अंत, आयात शुल्क में कमी, और मूल्य नियंत्रण समाप्त करना।
- **निजीकरण (Privatization):** सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में विनिवेश (Disinvestment) और निजी क्षेत्र के लिए दरवाजे खोलना।
- **वैश्वीकरण (Globalization):** भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ना, FDI और FII नियमों को उदार बनाना।

- **2. प्रभाव:**

- **सकारात्मक:** जीडीपी वृद्धि दर में तीव्र उछाल; विदेशी मुद्रा भंडार में भारी वृद्धि; आईटी और सेवा क्षेत्र का अभूतपूर्व विकास।
- **नकारात्मक:** कृषि क्षेत्र की उपेक्षा; क्षेत्रीय विषमता और आय असमानता में वृद्धि; असंगठित क्षेत्र में असुरक्षित रोजगार।

प्रश्न 54: भारत में गरीबी उन्मूलन की प्रमुख रणनीतियाँ और योजनाओं (जैसे मनरेगा) का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:

भारत में गरीबी उन्मूलन हमेशा से नियोजन का एक प्रमुख उद्देश्य रहा है (विशेषकर 5वीं योजना का 'गरीबी हटाओ' नारा)।

- **1. रणनीतिक बदलाव:**

- **रिसाव सिद्धान्त (Trickle-Down Strategy):** शुरुआती दौर में माना गया कि जीडीपी वृद्धि से गरीबी स्वतः खत्म होगी, जो असफल रहा।
- **प्रत्यक्ष लक्षित कार्यक्रम:** 1970 के दशक के बाद सीधे गरीब कल्याण कार्यक्रम शुरू किए गए।

- **2. मनरेगा (MGNREGA - 2005):**

- **विशेषता:** ग्रामीण परिवारों को एक वित्तीय वर्ष में 100 दिनों के अकुशल श्रम रोजगार की कानूनी गारंटी।
- **प्रभाव:** इसने ग्रामीण मजदूरी दर बढ़ाई, संकटकालीन प्रवास (Distress Migration) रोका, और ग्रामीण परिसंपत्तियों (जल संरक्षण, सड़क) का निर्माण किया।

- **3. चुनौतियाँ:**

कार्यान्वयन में भ्रष्टाचार, मजदूरी के भुगतान में देरी, और टिकाऊ परिसंपत्तियों का अभाव।

प्रश्न 55: भारत में धन और आय की असमानता के मुख्य कारणों तथा इन्हें कम करने के सरकारी उपायों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर:

ऑक्सफैम रिपोर्टों के अनुसार, भारत में आय और धन की असमानता तेजी से बढ़ी है, जहाँ शीर्ष 1% आबादी के पास देश की 40% से अधिक संपत्ति है।

- **1. असमानता के कारण:**

- **असंतुलित संवृद्धि:** सेवा क्षेत्र (उच्च कुशल) का तीव्र विकास, जबकि बहुसंख्यक आबादी वाली कृषि (कम आय) की धीमी वृद्धि।
- **बेरोजगारी एवं अल्प-रोजगार:** अनौपचारिक/असंगठित क्षेत्र में 90% श्रम बल का होना जिन्हें सामाजिक सुरक्षा नहीं मिलती।
- **पूँजी का संकेंद्रण:** संपत्ति और कॉर्पोरेट मुनाफे में वृद्धि की तुलना में मजदूरी वृद्धि दर कम होना।

- **2. सरकारी उपाय:**

- **प्रगतिशील कर प्रणाली:** उच्च आय वर्गों पर उच्च कर और सरचार्ज।
- **सामाजिक सुरक्षा एवं प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT):** जन धन, राशन योजना, और पीएम-किसान।
- **मानव पूँजी में निवेश:** समग्र शिक्षा अभियान और आयुष्मान भारत।

प्रश्न 56: 'सहकारी संघवाद' (Cooperative Federalism) क्या है और नीति आयोग इसे बढ़ावा देने में कैसे मदद करता है?

उत्तर:

सहकारी संघवाद का अर्थ है कि केंद्र और राज्य सरकारें राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी के रूप में नहीं, बल्कि 'बराबर के भागीदार' के रूप में मिलकर काम करें।

- **1. नीति आयोग की भूमिका:**

- **गवर्निंग काउंसिल:** राज्यों के मुख्यमंत्रियों को नीति निर्माण की प्रक्रिया में सीधे निर्णय लेने का अधिकार दिया गया है।
- **'टीम इंडिया' हब:** केंद्र और राज्यों के बीच एक स्थायी संवाद मंच के रूप में कार्य करता है।

- **प्रतिस्पर्धी संघवाद (Competitive Federalism):** नीति आयोग विभिन्न सूचकांक (जैसे स्वास्थ्य सूचकांक, स्कूल शिक्षा गुणवत्ता सूचकांक, आकांक्षी जिला कार्यक्रम) जारी करता है, जिससे राज्यों के बीच सकारात्मक विकास प्रतिस्पर्धा उत्पन्न होती है।

प्रश्न 57: भारत के आर्थिक विकास में 'विदेशी प्रत्यक्ष निवेश' (FDI) की भूमिका और सीमाओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर:

1991 के सुधारों के बाद भारत में पूंजी, तकनीक और प्रबंधन कौशल के आगमन के लिए FDI को महत्वपूर्ण साधन माना गया।

- **1. विकास में भूमिका:**
 - **पूँजी की कमी को पूरा करना:** घरेलू बचत और निवेश के अंतर (Savings Gap) को भरता है।
 - **प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण:** उन्नत विदेशी तकनीक और आधुनिक प्रबंधन पद्धतियों का आगमन।
 - **रोजगार एवं निर्यात:** विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में नए रोजगार पैदा करता है और विदेशी मुद्रा अर्जित करता है।
- **2. सीमाएँ/चिंताएँ:**
 - अधिकांश FDI विनिर्माण के बजाय सेवा और आईटी क्षेत्र में जाता है।
 - घरेलू छोटे उद्योगों (MSMEs) के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा।
 - लाभ का अपने मूल देश में वापस भेजा जाना (Repatriation of Profits)।

प्रश्न 58: भारत में 'जनसांख्यिकीय लाभांश' (Demographic Dividend) क्या है? इसे भुनाने की चुनौतियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

जनसांख्यिकीय लाभांश का तात्पर्य किसी देश की कुल जनसंख्या में कार्यशील आबादी (15 से 64 वर्ष) के अनुपात के बढ़ने से मिलने वाले आर्थिक लाभ से है।

- **1. भारत की स्थिति:**

भारत की मध्यिका आयु (Median Age) लगभग 28 वर्ष है, जो चीन, जापान और यूरोपीय देशों की तुलना में काफी युवा है। भारत के पास 2050 तक यह अवसर उपलब्ध है।

- **2. भुनाने के लिए आवश्यक शर्तें एवं चुनौतियाँ:**

- **रोजगार सृजन:** यदि युवा आबादी के लिए उत्पादक रोजगार नहीं होंगे, तो यह लाभांश 'जनसांख्यिकीय आपदा' (Demographic Disaster) में बदल सकता है।
- **शिक्षा एवं कौशल विकास:** भारत में केवल एक छोटा हिस्सा ही औपचारिक रूप से कुशल है।
- **स्वास्थ्य:** युवाओं का शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है।

प्रश्न 59: भारत में महालनोबिस मॉडल (Mahalanobis Model) का दूसरी पंचवर्षीय योजना में क्या योगदान था?

उत्तर:

प्रोफेसर पी.सी. महालनोबिस द्वारा विकसित द्वि-क्षेत्रीय (और बाद में चार-क्षेत्रीय) मॉडल द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-61) का आधार बना।

- **1. मूल रणनीति:**

मॉडल ने तर्क दिया कि तीव्र और आत्मनिर्भर विकास प्राप्त करने के लिए **भारी एवं बुनियादी उद्योगों (Capital Goods Sector)** में निवेश को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

- **2. तर्क:**

यद्यपि उपभोक्ता वस्तुओं के उद्योग अल्पकाल में अधिक रोजगार देते हैं, लेकिन पूँजीगत वस्तुओं के उद्योग (जैसे स्टील, मशीनरी) देश की भविष्य की निवेश और उत्पादन क्षमता को बढ़ाते हैं।

- **3. आलोचना:**

इस मॉडल में कृषि और उपभोक्ता वस्तुओं की उपेक्षा की गई, जिससे आगे चलकर खाद्यान्न संकट और मुद्रास्फीति की स्थिति बनी।

प्रश्न 60: भारत के आकांक्षी जिला कार्यक्रम (Aspirational Districts Programme) की मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

जनवरी 2018 में नीति आयोग द्वारा भारत के 112 सबसे पिछड़े जिलों के त्वरित रूपांतरण के लिए 'आकांक्षी जिला कार्यक्रम' शुरू किया गया था।

- **1. 3 Cs का सिद्धान्त:**

- **Convergence** (केंद्र और राज्य की योजनाओं का अभिसरण)।
- **Collaboration** (केन्द्रीय, राज्य प्रभारियों और जिला कलेक्टरों का सहयोग)।
- **Competition** (जिलों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा)।
- **2. 5 मुख्य विषय:**
जिलों की प्रगति को 49 मुख्य सूचकांकों के आधार पर मापा जाता है: (i) स्वास्थ्य और पोषण (30%), (ii) शिक्षा (30%), (iii) कृषि और जल संसाधन (20%), (iv) वित्तीय समावेशन और कौशल विकास (10%), और (v) बुनियादी ढाँचा (10%)।
- **3. परिणाम:**
इस कार्यक्रम ने रियल-टाइम डेटा ट्रैकिंग (Delta Ranking) के माध्यम से पिछड़े जिलों के प्रदर्शन में अभूतपूर्व सुधार किया है।

इकाई 7: समकालीन वैश्विक एवं पर्यावरणीय मुद्दे (Contemporary Global & Environmental Issues)

प्रश्न 61: पर्यावरण और आर्थिक विकास के बीच द्वंद्व की व्याख्या कीजिए। 'हरित लेखांकन' (Green Accounting) क्या है?

उत्तर:

पारंपरिक आर्थिक विकास ने प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन और पर्यावरण प्रदूषण की कीमत पर वृद्धि हासिल की है।

- **1. द्वंद्व (Conflict):**
अत्यधिक औद्योगीकरण और उपभोग से ग्लोबल वार्मिंग, वनों की कटाई, और जैव विविधता का हास हो रहा है। दीर्घकाल में पर्यावरणीय क्षति स्वयं आर्थिक संवृद्धि को बाधित करने लगती है।
- **2. हरित लेखांकन (Green Accounting / Green GDP):**
पारंपरिक GDP में केवल उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य जोड़ा जाता है, लेकिन पर्यावरण को हुए नुकसान को घटाया नहीं जाता।
 - **हरित GDP का सूत्र:**

$$\text{Green GDP} = \text{Traditional GDP} - \text{Natural Capital Depreciation} - \text{Environmental Damage Costs}$$
 - यह अवधारणा राष्ट्रीय आय की गणना में प्राकृतिक संसाधनों के हास और प्रदूषण लागत को

समायोजित करती है।

प्रश्न 62: जलवायु परिवर्तन (Climate Change) का विकासशील देशों के आर्थिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

उत्तर:

जलवायु परिवर्तन अंतर्राष्ट्रीय विकास के लिए सबसे बड़ा खतरा बनकर उभरा है, जिसका सबसे अधिक प्रभाव विकासशील और अल्पविकसित देशों पर पड़ रहा है।

- **1. आर्थिक प्रभाव:**

- **कृषि पर प्रभाव:** बेमौसम बारिश, सूखा और बाढ़ के कारण फसल उत्पादकता में गिरावट, जिससे खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ती है।
- **बुनियादी ढाँचे की क्षति:** चक्रवात और समुद्र का जलस्तर बढ़ने से तटीय शहरों और ढाँचे का विनाश।
- **स्वास्थ्य लागत:** गर्मी की लहरों और जल जनित बीमारियों के कारण उत्पादकता में कमी और स्वास्थ्य व्यय में वृद्धि।

- **2. न्याय का मुद्दा (Climate Justice):**

विकासशील देशों का ऐतिहासिक कार्बन उत्सर्जन में योगदान बहुत कम रहा है, लेकिन वे इसके दुष्प्रभावों का सबसे ज्यादा सामना कर रहे हैं। इसके लिए विकसित देशों से 'जलवायु वित्त' (Climate Finance) और तकनीक हस्तांतरण की मांग की जाती है।

प्रश्न 63: 'विदेशी सहायता' (Foreign Aid) का विकासशील देशों के विकास में योगदान और इसकी सीमाओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर:

विदेशी सहायता (Official Development Assistance - ODA) का तात्पर्य विकसित देशों या अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा विकासशील देशों को रियायती शर्तों पर दी जाने वाली वित्तीय या तकनीकी मदद से है।

- **1. सकारात्मक भूमिका:**

- **बचत और विदेशी मुद्रा की कमी को दूर करना:** (Dual Gap Model)।
- संकट, महामारी या प्राकृतिक आपदाओं के समय त्वरित राहत।
- बड़े बुनियादी ढाँचे (बाँध, अस्पताल, स्कूल) के निर्माण में मदद।

- **2. सीमाएँ और आलोचनाएँ (डैम्बिसा मोयो - Dead Aid):**

- **निर्भरता संस्कृति:** सहायता पर अत्यधिक निर्भरता से घरेलू कर जुटाने के प्रयास धीमे पड़ जाते हैं।
- **भ्रष्टाचार:** अक्सर सहायता की राशि का बड़ा हिस्सा प्रशासनिक भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाता है।
- **शर्तबद्ध सहायता (Tied Aid):** दाता देश अपनी शर्तों के साथ सहायता देते हैं, जिससे प्राप्तकर्ता देश की संप्रभुता प्रभावित होती है।

प्रश्न 64: बहुराष्ट्रीय कंपनियों (MNCs) का विकासशील अर्थव्यवस्थाओं पर प्रभाव: लाभ और हानियों का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:

वैश्वीकरण के दौर में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ (MNCs) अंतर्राष्ट्रीय पूंजी और व्यापार का मुख्य चालक बन गई हैं।

- **1. लाभ:**

- **तकनीकी हस्तांतरण:** आधुनिक उत्पादन तकनीकों और R&D का प्रसार।
- **रोजगार सृजन:** प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बड़े पैमाने पर रोजगार।
- **वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला से जुड़ना:** देश के निर्यात में वृद्धि।

- **2. हानियाँ:**

- **लाभ का निष्कासन:** अधिकांश लाभ को अपने गृह देश वापस भेज देना।
- **घरेलू उद्योगों का विनाश:** अपार पूँजी बल के कारण स्थानीय छोटे उद्योगों को समाप्त कर देना।
- **पर्यावरणीय दोहन:** ढीले पर्यावरणीय नियमों का फायदा उठाकर प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों की स्थापना।

प्रश्न 65: विश्व बैंक (World Bank) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की विकासशील देशों में भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर:

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद गठित ब्रिटेन वुड्स जुडवाँ संस्थाएँ (IMF और विश्व बैंक) वैश्विक वित्त प्रणाली की रीढ़ हैं।

- **1. भूमिका:**

- **विश्व बैंक:** दीर्घकालिक विकास परियोजनाओं (शिक्षा, स्वास्थ्य, ढाँचा) के लिए कम ब्याज पर ऋण और अनुदान देता है।

- **IMF:** भुगतान संतुलन (BoP) संकट से जूझ रहे देशों को अल्पकालिक वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

- **2. आलोचनाएं:**

- **संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम (SAP) की शर्तें:** IMF और विश्व बैंक ऋण देने के बदले कठोर शर्तें (जैसे सब्सिडी में कटौती, सार्वजनिक व्यय में कमी, और निजीकरण) थोपते हैं, जिससे गरीबों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
- **पश्चिम का वर्चस्व:** वोटिंग अधिकार प्रणाली के कारण यूएसए और यूरोपीय देशों का प्रभुत्व।

प्रश्न 66: 'विश्व व्यापार संगठन' (WTO) और विकासशील देशों के व्यापारिक हितों की विवेचना कीजिए।

उत्तर:

1 जनवरी 1995 को गठित WTO विश्व व्यापार के नियमों को संचालित करता है।

- **1. विकासशील देशों के लिए चिंताएँ:**

- **कृषि सब्सिडी विवाद (AoA):** विकसित देश अपने किसानों को भारी सब्सिडी (ग्रीन/एम्बर बॉक्स) देते हैं, जबकि विकासशील देशों के खाद्य सुरक्षा कार्यक्रमों (जैसे भारत का पीडीएस) पर सवाल उठाते हैं।
- **बौद्धिक संपदा अधिकार (TRIPS):** कठोर पेटेंट नियमों के कारण जीवन रक्षक दवाएं महंगी हो जाती हैं।
- **गैर-टैरिफ बाधाएं (Non-Tariff Barriers):** विकसित देश पर्यावरण और श्रम मानकों के नाम पर विकासशील देशों के निर्यातों को रोकते हैं।

प्रश्न 67: मानव पूँजी निर्माण (Human Capital Formation) में स्वास्थ्य और शिक्षा के निवेश के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

मानव पूँजी से तात्पर्य लोगों में मौजूद ज्ञान, कौशल, क्षमता और स्वास्थ्य के भंडार से है। अमर्त्य सेन के "क्षमता दृष्टिकोण" (Capability Approach) में शिक्षा और स्वास्थ्य को विकास का मूल आधार माना गया है।

- **1. शिक्षा का महत्व:**

- श्रमिकों की उत्पादकता और नवाचार करने की क्षमता बढ़ाती है।
- सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility) को बढ़ावा देती है और गरीबी का चक्र तोड़ती है।

- **2. स्वास्थ्य का महत्व:**

- बीमार श्रमिक काम से अनुपस्थित रहते हैं और उनकी उत्पादकता घटती है।
- बेहतर स्वास्थ्य जीवन प्रत्याशा बढ़ाता है, जिससे मानव पूँजी में किए गए निवेश का दीर्घकालिक लाभ मिलता है।
- बच्चों में बेहतर पोषण उनकी सीखने की क्षमता (Cognitive Abilities) को बढ़ाता है।

प्रश्न 68: 'जेंडर बजटिंग' (Gender Budgeting) क्या है और यह समावेशी विकास के लिए क्यों आवश्यक है?

उत्तर:

जेंडर बजटिंग कोई अलग बजट नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण बजट प्रक्रिया का लिंग-आधारित दृष्टिकोण से विश्लेषण करने का एक जरिया है।

- **1. उद्देश्य:**

यह सुनिश्चित करना कि सरकारी राजस्व और व्यय की नीतियाँ महिलाओं और पुरुषों के बीच विषमता को न बढ़ाएं, बल्कि महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण में योगदान दें।

- **2. आवश्यकता और महत्व:**

- महिलाओं का अवैतनिक देखभाल कार्य (Unpaid Care Work) GDP में नहीं जुड़ता।
- महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने से मानव पूँजी निर्माण तेज होता है।
- **भारत में स्थिति:** भारत ने 2005-06 के बजट में औपचारिक रूप से जेंडर बजट विवरण पेश करना शुरू किया था।

प्रश्न 69: डिजिटल अर्थव्यवस्था (Digital Economy) और 'डिजिटल विभाजन' (Digital Divide) का विकास पर प्रभाव बताइए।

उत्तर:

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के प्रसार ने विकास के नए आयाम खोले हैं।

- **1. डिजिटल अर्थव्यवस्था के लाभ:**

- **वित्तीय समावेशन:** यूपीआई (UPI) और मोबाइल बैंकिंग ने करोड़ों लोगों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली से जोड़ा।

- **सुशासन (e-Governance):** प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) से बिचौलियों और भ्रष्टाचार का अंत।
- **बाजार तक पहुँच:** ई-कॉमर्स से छोटे कारीगरों और किसानों को बड़ा बाजार मिलना।
- **2. डिजिटल विभाजन की चुनौती:**
अमीर-गरीब, शहरी-ग्रामीण और पुरुष-महिला के बीच इंटरनेट और डिजिटल साधनों की उपलब्धता में भारी अंतर है। यदि इस विभाजन को नहीं भरा गया, तो यह आर्थिक असमानता को और गहरा कर देगा।

प्रश्न 70: 'तीर का न्यायप्रमाण' या अमर्त्य सेन का 'क्षमता दृष्टिकोण' (Capability Approach) क्या है? विस्तृत व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन ने अपनी पुस्तक *Development as Freedom* (1999) में विकास की एक क्रांतिकारी अवधारणा प्रस्तुत की।

- **1. मूल सिद्धान्त:**
सेन के अनुसार, विकास का अंतिम लक्ष्य केवल वस्तुओं की उपलब्धता या आय में वृद्धि करना नहीं है, बल्कि **मानवीय स्वतंत्रताओं और क्षमताओं का विस्तार करना है।**
- **2. मुख्य घटक:**
 - **कार्यप्रणालियाँ (Functionings):** व्यक्ति वास्तव में क्या कर पाता है या क्या बन पाता है (जैसे स्वस्थ रहना, साक्षर होना, समाज में सम्मानित महसूस करना)।
 - **क्षमताएं (Capabilities):** व्यक्ति के पास विभिन्न प्रकार की कार्यप्रणालियों को चुनने की वास्तविक स्वतंत्रता का सेट।
- **3. नीतिगत निष्कर्ष:**
गरीबी केवल आय की कमी नहीं है, बल्कि 'क्षमता की वंचना' (Capability Deprivation) है। इसलिए नीतियों का ध्यान लोगों की स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा की क्षमताओं को बढ़ाने पर होना चाहिए ताकि वे अपना जीवन अपनी पसंद के अनुसार जी सकें।